[This question paper contains 4 printed pages.]

2017

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5484 **G**

Unique Paper Code : 205439

Name of the Paper : Hindi 'A'

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10 = 30)

(क) विपिन बीच विहंगम-वृंद का।
कलनिनाद विवर्द्धित था हुआ।
ध्वनिमयी-विविधा विहगावली।
उड़ रही नभ-मण्डल मध्य थी।।

(ख) खग समूह न था अब बोलता।
विटप थे बहु नीरव हो गए।

P.T.O.

मधुर मंजुल मत्त अलाप के।

अब न यंत्र बने तरु-वृंद थे।।

(ग) अपने अर्थशास्त्र के बावजूद वह यह समझता था कि आदमी की जिंदगी सिर्फ आर्थिक पहलू तक सीमित नहीं और वह यह भी समझता था कि जीवन को सुधारने के लिए सिर्फ आर्थिक ढाँचा बदल देने भर की जरूरत नहीं है। उसके लिए आदमी का सुधार करना होगा, व्यक्ति का सुधार करना होगा। वरना एक भरे-पूरे और वैभवशाली समाज में आज के-से अस्वस्थ और पाशविक वृत्तियों वाले व्यक्ति रहेंगे तो दुनिया ऐसी ही लगेगी जैसे एक खूबसूरत सजा-सजाया महल जिसमें कीड़े और राक्षस रहते हों।

(घ) जब भावना और सौंदर्य के उपासक को बुद्धि और वास्तविकता की ठेस लगती है तब वह सहसा कटुता और व्यंग्य से उबल उठता है। इस वक्त चन्दर का मन भी कुछ ऐसा ही हो गया था। जाने कितने जहरीले काँटे उसकी वाणी में उग आए थे, जिन्हें वह कभी भी किसी को चुभाने से बाज नहीं आता था। एक निर्मम निरपेक्षता से वह अपने जीवन की सीमा में आने वाले हर व्यक्ति को कटुता के जहर से अभिषिक्त करता चलता था।

(ङ) शाबाश! विजयसिंह ऐसा ही होगा। चाहे हमारो सर्वस्व नाश हो जाए परन्तु आकल्पान्त लोह लेखनी से हमारी यह प्रतिज्ञा दुष्ट यवनों के हृदय पर लिखी रहेगी। धिक्कार है उस क्षत्रियधर्म को जो इन चाण्डालों के मूल नाश में न प्रवृत्त हो।

2. 'नीलदेवी' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

नीलदेवी नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. हिन्दी कृष्ण-काव्य परंपरा में 'प्रियप्रवास' के महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए। (12)

अथवा

'प्रियप्रवास' के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के कथानक की चर्चा कीजिए। (12)

अथवा

भावना और सौंदर्य के उपासक के रूप में चन्दर की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

5. (क) ब्रज-धरा-जन जीवन-यंत्रिका।

विटप-वेलि-विनोदित-कारिणी।

मुरलिका जन-मानक-मोहिनी।

अहह नीरवता निहिता हुई।।

उपरोक्त अवतरण के आधार पर 'प्रियप्रवास' की काव्य-भाषा स्पष्ट कीजिए। (9)

अथवा

(ख) वल्लाह तुमने सच कहा, अजब बद किरदार से पाला पड़ा, जान तंग है। किसी तरह यह कमबख्त हाथ आता तो और राजपूत खुद ब खुद पस्त हो जाते।

उपरोक्त अवतरण के आधार पर 'नीलदेवी' नाटक की नाट्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

(8)

[This question paper contains 4 printed pages.]

2017

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5485 **G**

Unique Paper Code : 205440

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा

Name of the Course : **B.A. Prog. Hindi B**

पाठ्यक्रम का नाम : **बी. ए. प्रोग्राम. हिंदी – ख**

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Duration : 3 Hours
समय : 3 घंटे

Maximum Marks : 75
पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8)

(क) बीती अनेक शताब्दियाँ जिस देश में रहते तुम्हें,
क्या लाज आवेगी उसे अपना 'वतन' कहते तुम्हें?
तुम लोग भारत को कभी समझो अरब से कम नहीं?
यद्यपि जगत में और कोई देश इसके सम नहीं।

P.T.O.

अथवा

नारी-जनों की दुर्दशा हमसे कही जाती नही,
लज्जा बचाने को अहो! जो वस्त्र भी पाती नहीं।
जननी पड़ी है और शिशु उसके हृदय पर मुख धरे,
देखा गया है, किंतु वे मां-पुत्र दोनों हैं मरे!

(ख) तुम्हें सारी चीजें याद हैं, तभी तो इतने दुखी हो। मैं कहता हूं, दुनिया जहन्नुम में जाये, तुमसे क्या?..... मुझसे क्या? क्या है हमारे अधिकार में? हमारी क्या ताकत है? इस ब्रह्माण्ड में हम सुई की नोंक का करोड़वां हिस्सा भी तो नहीं हैं। (7)

अथवा

मुझे तब इतना नहीं पता था कि यहाँ हर मूल्य की जड़ में वही गुलामी है। आज्ञाकारी होना किसी ऐसे चक्रव्यूह में पैर रखना है..... मुझे इस धोखे का पता नहीं था। अब बोलो, हमने यहाँ से जाने की क्या तैयारी की है ?

(ग) "भन्तेगण सुनें, जो संकट आज हमारी सम्मुख है, ऐसा वैशाली पर कभी नहीं आया था। शत्रु को यही छिद्र मिल गया है, कि हमारी सेना और कोष अव्यवस्थित और अपर्याप्त हैं, तभी वह साहस कर रहा है; और यह झूठ भी नहीं है। हमें नियमित राजस्व नहीं मिल

रहा है। दुर्ग-प्राकारों और नगर-प्राकारों का भी संस्कार कराना आवश्यक है। परिखा में जल नहीं है और उसमें मिट्टी भर गई है। वे खेत हो रही है। (8)

अथवा

शुल्क, तुम दे सकते हो, सो तो हैं, परंतु भाई तुम हो कौन? जानते हो वैशाली में बड़े-बड़े ठग और चोर-दस्यु नागरिक का वेश बनाकर आते हैं। वैशाली की संपदा ही ऐसी है भाई, मैं सब देखते-देखते बूढ़ा हुआ हूँ।

2. 'भारत-भारती का काव्य रूप सिद्ध कीजिए। (15)

अथवा

भारत-भारती व्यक्त राष्ट्रीय चेतना की विवेचना कीजिए।

3. रंगमंच की दृष्टि से 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का कथासार लिखिए।

4. 'वैशाली की नगर वधू' की ऐतिहासिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'वैशाली की नगर वधू' के प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

5. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) 'भारत-भारती' की भाषिक विशेषताएँ

(ख) 'मिस्टर अभिमन्यु' की नाट्य-भाषा

(ग) 'वैशाली की नगर-वधू' की भाषा (7)

(9)

[This question paper contains 4 printed pages.]

09/5/17

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8844 **GC**

Unique Paper Code : 62051404

Name of the Paper : Hindi 'A' हिन्दी गद्य उद्भव और विकास

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi 'A'**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **All** questions are compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (20)

(क) मधूलिका ने राजा का प्रतिदान, अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी-सूखी खाकर पड़ी रहती। मधूक वृक्ष के नीचे छोटी-सी पर्ण कुटी थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधूलिका का वही आश्रम था। कठोर परिश्रम से जो रूखा अन्न

मिलता, वही उसकी साँसों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था। दुबली होने पर भी उसके अंग पर तपस्या की कान्ति थीं आस-पास के कृषक उसका आदर करते थे। वह एक आदर्श बालिका थी।

अथवा

गनी ने देखा कि पहलवान के होंठ सूख रहे हैं और उसकी आँखों के गिर्द दायरे गहरे हो गए हैं। वह उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला- 'जो होना था, हो गया रक्खिया! उसे अब कोई लौटा थोड़े ही सकता है! खुदा नेक की नेकी बनाए रखे और बद की बदी माफ करे! मैंने आकर तुम लोगों को देख लिया, सो समझूंगा कि चिराग को देख लिया। अल्लाह तुम्हें सेहतमन्द रखें।'

(ख) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगे तो भीगे, मुकुट न भीगने पाए, इसकी चिंता बनी रही।

अथवा

गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुःख-सुख को सहानुभूमि के साथ देखता है। यह आत्म-निर्मित

बन्धन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उत्स यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजान में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है। लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था।

2. कहानी की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

संस्मरण और रेखाचित्र का सामान्य परिचय दीजिए।

3. 'नमक का दरोगा' कहानी यथार्थ से आदर्श की यात्रा है'-मूल्यांकन कीजिए। (12)

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

4. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबन्ध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'उत्साह' निबंध का सार लिखिए।

5. 'अंधेर-नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'घीसा' का चरित्र मर्मस्पर्शी है-विवेचन कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए। 7

(क) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास;

(ख) भारतेंदुयुगीन नाटक।

(10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

09/5/17

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8845 **GC**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : ~~हिन्दी भाषा और साहित्य~~ हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi-B**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निबंध के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

कहानी की परिभाषा देते हुए उसके विकास को स्पष्ट कीजिए।

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'उसने कहा था' कहानी की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'मेले का ऊंट' निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध भ्रष्ट व्यवस्था का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है- स्पष्ट कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी नाटक के कथानक की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'बिबिया नारी की पीड़ा व्यक्त करने वाली रचना है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए- (10+10)

(क) चार दिन तक पलक नहीं झाँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुकुम मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीन न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े - संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का एक गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल साहब ने हट आने का कमान दिया, नहीं तो.....।

अथवा

पहली बार आपकी बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होना चाहिए, क्योंकि आप सम्पादक हैं। किन्तु आपकी दृष्टि

गिद्ध की सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर एक गेहूँ का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा। यहाँ तक कि उस गेहूँ के दाने को चुगने से पहले जाल में फँस गया।

(ख) महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उहें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ?

अथवा

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पण्डित तैसे।।

कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई।।

जात-पाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।

6. निम्नलिखित मे से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) नाटक और एकांकी में अंतर

अथवा

(ख) शुक्ल पूर्व निबंध का विकास

अथवा

(ग) हिन्दी आलोचना

[This question paper contains 4 printed pages.]

09/5/17

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 8846 **GC**

Unique Paper Code : 62051413

Name of the Paper : Hindi-C

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×2=20)

(क) बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरे को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहां भी इसे अपनी बुढ़िया दारी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

P.T.O.

(ख) आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खा कर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सट कर बैठी आंखे फाड़े दीवार को देखे जा रही थी। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनकने की आवाज आ रही थी। तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाजा जोर से खटकने लगा।

(ग) जीभ को न दबाना अनेक बुराई और क्लेश का कारण है। महाभारत ऐसा सर्वनाशी संग्राम इसी जीभ के न दबाने की बदौलत किया गया। द्रौपदी ने यदि दुर्योधन को 'अंधे के अंधे होते हैं' इस मर्मभेदी वाक्य को कह मर्म ताड़न न किया होता और दुर्योधन को पांडवों से खार न पैदा हुई होती तो परिणाम में 18 अक्षौहिणी सेना काहे को कट मरती, जिसका धक्का जो हिन्दुस्तान को लगा बल्कि जैसा कारी घाव इसके शरीर में हो गया, उसकी मरहमपट्टी आज तक न हो सकी।

(घ) द्विवेदी जी में मध्यकालीन संतों जैसी संघर्षशीलता नहीं थी। किसी को दुःख न पहुंचाया जाये इस विषय में तो उनका आचरण आदर्श था किंतु अनुचित का सक्रिय प्रतिरोध करना, उसके विरुद्ध संघर्ष करना उनके बस में नहीं था। अपने को जो वह अनेकान्तवादी कहते थे, वह भी वस्तुतः संघर्ष को टालने की ही वृत्ति के कारण था।

2. (क) हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (12)

अथवा

हिन्दी निबंध के विकास पर प्रकाश डालिए।

(ख) "ईदगाह" कहानी का सारांश लिखिए। (12)

अथवा

"चीफ की दावत" कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

(ग) "ज़बान" निबंध की विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

हमारे देश में गांवों की क्या समस्याएँ हैं। स्पष्ट कीजिए।

(घ) "गिल्लू" की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

"गंगा स्नान करने चलोगे" संस्मरण का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. निम्नलिखित मे से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(क) जयशंकर प्रसाद के नाटक

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध

(ग) रेखाचित्र

This question paper contains 4 printed pages] 09/5/17

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 8849

Unique Paper Code : 62131802 GC

Name of the Paper : Grammar and Composition

(CORE MIL-B2)

Name of the Course : B.A. (Prog.) CBCS

Semester : IV

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

टिप्पणी :—अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिंदी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Note :— Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit *or* in Hindi *or* in English, but the same medium should be used throughout the paper.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer *All* questions.

P.T.O.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए : 3×5=15

Comment on any *three* of the following :

वृद्धि, जश्त्व, यण्, दीर्घ, लोप

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पदों का संधि-विच्छेद कीजिए : 5×1=5

Split Sandhis in any *five* of the following :

परोपकारः, नायकः, पावनः, श्रीशः, विद्यालयः, प्रत्येकम्, अद्यैव, सदैव।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पदों में संधि कीजिए : 5×2=10

Join Sandhis in any *five* of the following :

नर + इन्द्रः, गण + ईशः, महा + आत्मा, विद्या + अर्थी, इति + आदिः, सु + आगतम्, ने + अनम्, पो + अनम्।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पदों का विग्रह-उल्लेखपूर्वक समास परिचय दीजिए : 5×2=10

Split and name the Samasa in any *five* words :

हरित्रातः, पितापुत्रौ, पीताम्बरः, प्रत्येकम्, निर्जनम्, उपवनम्, राजपुत्रः, राष्ट्रभाषा।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी कीजिए : 1×5=5

Comment on any *one* of the following :

अव्ययीभाव **अथवा** तत्पुरुष

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पदों का प्रकृति-प्रत्यय परिचय दीजिए : 5×1=5

Write the root and suffix of any *five* of the following words :

लेखकः, याजकः, दाता, लिखितः, दातव्यम्, पठनीयम्, पठितवान्, पठित्वा

7. निम्नलिखित में से प्रकृति-प्रत्यय को मिलाकर किन्हीं **पाँच** पदों का निर्माण कीजिए : 5×2=10

Join the root and suffix of any *five* of the following words :

जि+क्त, गम्+क्तवतु, कथ+शतृ, लभ्+शानच्, हृ+ण्यत्, कृ+तृच्, पा+तुमुन्, नी+क्त्वा

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : 5×1=5

Translate any *five* of the following sentences into Sanskrit :

(*i*) सुरेश हंसता है।

(*ii*) काजल वहाँ जाती है।

(*iii*) बालक खेलता है।

(*iv*) हम सब महाविद्यालय में पढ़ते हैं।

(*v*) हमारे देश का नाम भारत है।

(*vi*) नरेश गेंद से खेलता है।

(*vii*) वे दोनों भोजन करते हैं।

(*viii*) वह संस्कृत पढ़ता है।

9. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिए : 10

Write an essay in Sanskrit on any *two* of the following :

(*i*) संस्कृतभाषा

(*ii*) रामायणम्

(*iii*) सत्संगति

(*iv*) मम प्रियक्रीडा।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 9079 GC

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadhya Vidhayen
अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A./B.Com. (Prog.) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. बालमुकुंद गुप्त ने लार्ड कर्जन के किन कार्यों की आलोचना की हैं ? विवेचन कीजिए।

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

2. भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'अदम्य जीवन' रिपोर्ताज के माध्यम से व्यक्त यथार्थ का चित्रण कीजिए।

(12)

P.T.O.

3. 'शायद' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए।

अथवा

ध्वनि-रूपक की दृष्टि से 'वैष्णव जन' का मूल्यांकन कीजिए। (12)

4. हरिशंकर परसाई ने 'उखड़े खम्भे' के माध्यम से किस वर्ग पर करारा व्यंग्य किया है ? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लक्खा बुआ कौन है ? तथा उसे जीवन में किन कष्टों का सामना करना पड़ता है ? विचार कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (7×2=14)

(क) यह मूर्तियाँ किस प्रकार के स्मृति-चिह्न हैं ? इस दरिद्र देश के बहुत से धन की एक ढेरी है, जो किसी काम नहीं आ सकती। एक बार जाकर देखने से ही विदित होगा कि वह कुछ विशेष पक्षियों के कुछ देर विश्राम लेने के अड्डे से बढ़कर कुछ नहीं है। माई लार्ड ! आपकी मूर्ति की वहाँ क्या शोभा होगी ? आइये मूर्तियाँ दिखावें ! वह देखिये एक मूर्ति है, जो किले के मैदान में नहीं हैं, पर भारतवासियों के हृदय में बनी हुई है। पहचानिये, इस वीर पुरुष ने मैदान की मूर्ति से इस देश के करोड़ों गरीबों के हृदय में मूर्ति बनवाना ज्यादा अच्छा समझा।

(ख) बन्धुत्व और समता, सभ्यता तथा प्रेम सामाजिक जीवन के आरंभ से हो, आदर्शवादियों का सुनहला स्वप्न रहे हैं। धर्म प्रवर्तकों ने धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक बन्धनों से इस स्वप्न को सच्चाई बनाने का

सतत् किन्तु निष्फल यत्न किया है। महात्मा बुद्ध, हज़रत ईसा, हज़रत मुहम्मद आदि सभी पैगम्बरों और धर्म प्रवर्तकों ने नीति की नींव पर इस समता की इमारत खड़ी करनी चाही; पर किसी को सफलता न मिली और छोटे-बड़े का भेद जिस निष्ठुर रूप में आज प्रकट हो रहा है, शायद कभी न हुआ था।

(ग) इस दण्ड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी के पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जाती; पर उसके पति ने उसे कभी उंगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था।

(घ) सदियों से कंगाल- हम लोगों पर बार-बार बाहरी हमले होते रहे; मगर आक्रमणकारी कभी भी यहाँ को शस्य-श्यामला पवित्र भूमि को नहीं रौंद सके। यहाँ मनुष्य को इतना समय मिल चुका था कि वह बैठकर इतने आराम से इतने सुंदर और स्वच्छ घर बना सकता। और आज वही घर निर्जल की अर्गला लगाए मूक खड़े थे ! अकाल ने उन पर अपनी जो बीभत्स छाया डाली थी, उसका धुँधलका अभी तक भी मानों कानों में छिपा बैठा था।

6. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (7+6=13)

(क) प्रेम के साथ सभी को क्षुद्र से क्षुद्र को भी, यहाँ तक कि जिसे अछूत भी न छुएगा ऐसे व्यक्ति को भी छाती से लगा लेने वाली अहिंसा की

अभिव्यक्ति ! स्वाधीनता संग्राम के गंभीर क्षणों में भी शास्त्री जी के कोढ़ के घाव उनके नेत्रों के सामने घूमते रहते थे। वे रोज अपने हाथों से उन घावों को साफ़ करते और शरीर की मालिश करते।

अथवा

लगता है यह नहीं करना, वह करना है। यहाँ नहीं रहना, वहाँ जाना है ....। वह कोई बाहर से आया हुआ है न.... कहीं का प्रधान मन्त्री या कौन ? उसी के बारे में खबरें थीं। एक-साथ पचासों चीज़ें हथौड़े मारती रहती हैं दिमाग पर। उनमें मिलने वालों के चेहरे भी होते हैं, दफ्तर की फाइलें भी होती है .... वह प्रामोशन का केस ही था जैसे ...और चीज़ों के बीच उसी का आरा हर वक्त दिमाग से चलता रहता है।

(ख) सोलहवें दिन सुबह उठकर लोगों ने देखा कि बिजली के सारे खम्भे उखड़े पड़े हैं। वे हैरान कि रात को न आँधी आयी न भूकम्प आया, फिर ये खम्भे कैसे उखड़ गये। उन्हें एक खम्भे के पास एक मजदूर खड़ा मिला। उसने बतलाया कि मजदूरों से रात को ये खम्भे उखड़वाये गए हैं। लोग उसे पकड़कर राजा के पास ले गए।

अथवा

ज्यादातर लोग प्रयोजनातीत कला की उच्च आनन्द-साधना के लिए जाते। लक्खा बुआ बसंती, बैंजनी, धानी, कुसुम्भी रंग की साड़ी पहन कर खास अंदाज से पान लगातीं। पान धोने, कत्था लगाने, चूना लगाने, सरौता से सुपारी काटने, बीड़ा लगाने, पेश करने की अलग-अलग भंगिमाएं होतीं। हँसने की अलग-अलग छवियाँ और कनखियों से देखने की।

(14)

[This question paper contains 2 printed pages.]

2017

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9137 **GC**

Unique Paper Code : 62053408

Name of the Paper : विज्ञापन और हिंदी भाषा

Name of the Course : **बी.ए. (प्रोग्राम)** SEE

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विज्ञापन की परिभाषा देते हुए इसका महत्त्व स्पष्ट कीजिये।

अथवा

विज्ञापन के सामाजिक एवं व्यावसायिक उद्देश्य की विस्तृत चर्चा कीजिये।

(12)

2. ब्रांड-निर्माण क्या है? वर्तमान समय में ब्रांड-निर्माण बाज़ार के लिए कितना आवश्यक है, विवेचन कीजिये।

अथवा

P.T.O.

विज्ञापन और प्रायोजित कार्यक्रमों के पारस्परिक संबंधों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिये। (12)

3. विज्ञापनों की सफलता पर माध्यमों के चयन का क्या प्रभाव पड़ता है, उदाहरण सहित समझाइए।

अथवा

समाचार पत्र एवं टेलीविजन के विज्ञापनों के कॉपी लेखन का अंतर स्पष्ट कीजिए। (12)

4. विज्ञापन की भाषा का स्वरूप बताते हुए इसकी विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

विज्ञापन निर्माण की प्रक्रिया बताते हुए प्रिंट माध्यम के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिये। (12)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए–

(क) रेडियो जिंगल लेखन;

(ख) हिंदी विज्ञापन की भाषा;

(ग) विज्ञापन और मार्केटिंग;

(घ) विज्ञापनों में नैतिकता का प्रश्न;

(ङ) विज्ञापनों में भाषा संकर;

(च) टेलीविजन के लिए स्टोरी बोर्ड निर्माण। (9x3=27)

(200)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 9080 GC

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadhya Vidhayen
अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : B.A./B.Com. (Prog.) HINDI (CBCS)

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'शिवशंभू के चिट्ठे बनाम लार्ड कर्जन' निबन्ध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'साहित्य लेखक का मनोवैज्ञानिक जीवन-चरित्र है' - इससे क्या तात्पर्य है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए। (12)

2. महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरणों में नारी-शोषण का यथार्थ चित्रण किया है 'भक्तिन' के आधार पर स्पष्ट कीजिए ?

अथवा

'अदम्य जीवन' में लेखक ने किन-किन समस्याओं को उठाया है ? विचार कीजिए। (12)

3. 'शायद' एकांकी में लेखक ने मध्यवर्गीय पारिवारिक विसंगति का चित्रण किया है ? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वैष्णव जन' ध्वनि-रूपक की समीक्षा कीजिए। (12)

4. 'उखड़े खम्भे' में चित्रित व्यंग्य पर विचार कीजिए।

अथवा

लक्खा बुआ के जीवन में उसके प्रेम-प्रसंगों की क्या भूमिका थी ? तर्क सहित उत्तर दीजिए। (12)

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7×2=14)

(क) माता-पिता की याद आते ही बालक शिवशम्भू का सुख स्वप्न भंग हो गया। दरबार समाप्त होते ही वह दरबार-भवन, वह एम्फीथियेटर तोड़कर रख देने की वस्तु हो गया। उधर बनाना, इधर उखाड़ना पड़ा। नुमाइशी चीजों का यही परिणाम है। उनका तितलियों का सा-जीवन होता है। माई लार्ड ! आपने कछाड़ के चाय वाले साहबों की दावत खाकर कहा था कि यह लोग यहाँ नित्य हैं और हम लोग कुछ दिन के लिए।

(ख) हम साहित्यकारों में कर्मशक्ति का अभाव है। यह एक कड़वी सच्चाई है; पर हम उसकी ओर से आँखें नहीं बंद कर सकते। अभी तक हमने साहित्य का जो आर्दश अपने सामने रखा था, उसके लिए कर्म की

आवश्यकता न थी, कर्माभाव ही उसका गुण था, क्योंकि अक्सर कर्म अपने साथ पक्षपात और संकीर्णता को भी लाता है। अगर कोई आदमी धार्मिक होकर अपनी धार्मिकता पर गर्व करे, तो इससे कहीं अच्छा है कि वह धार्मिक न होकर 'खाओ पीओ मौज करो', का कायल हो।

(ग) शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है। मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, अत: मैंने भक्तिन को रोका। उसने अंकुठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है। कुतूहलवश मैं पूछ ही बैठी - 'क्या लिखा है' ? तुरंत उत्तर मिला - 'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध।' कौन-से शास्त्र का यह रहस्यमय सूत्र है, यह जान लेना मेरे लिए संभव ही नहीं था।

(घ) खेतों में कब्रें चुपचाप उदास-सी सोई पड़ी थीं, जिन्हें चिथड़ों में लिपटा एक बुड्ढा एक पेड़ की छाया में बैठा विरक्त भाव से देख रहा था। एक टूटी-सी दीवार में तीन आले अब भी खड़े थे; मगर घर नहीं थे। आठों घर विध्वस्त पड़े थे। उनके सामने बराबर-बराबर में तीस कब्रें पड़ी थी और एक नवयुवक, जो देखने में बूढ़ा लगता था, उनकी ओर देख-देखकर मुस्करा रहा था। वे एक दिन जुलाहों के घर थे; पर अकाल के ताने और बीमारियों के बाने ने सहसा उनके जीवन-व्यापार का अंत कर दिया था।

6. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) जो वाचा दृढ़ रखता है, जो आचार दृढ़ रखता है, जो मन दृढ़ रखता है, उसकी जननी धन्य है। वैष्णव जन न तो अशांत हो सकता है और न अस्थिर। वह सत्य को देख लेता है और फिर निश्चल हो जाता

है। भयंकर-से-भयंकर संकट में भी डग-मगाता नहीं क्योंकि वह सत्य का संघर्ष है और सत्य का संघर्ष कठोर और लंबा होता है। अफ्रीका में सत्याग्रह के समय उनके साथी कैलन बाख जेब में पिस्तौल रखकर उनके साथ चलते थे।

अथवा

और क्या ? मैं भी तो मेच्योर हो गयी हूँ।... पहले हम खुश रहते थे, आस-पास के लोग भी हमें खुश लगते थे। अब लगता है कि आस-पास के लोग भी दुःखी हैं, हम भी दुःखी हैं। और मेच्योरिटी क्या होती है ? जिन-जिन लोगों के लिए कहा करते हो कि वे मेच्योर हैं, बताओ उनमें कौन दुःखी नहीं हैं ?

(ख) "सरकार, मैं विशेषज्ञ हूँ और भूमि तथा वातावरण की हलचल का अध्ययन करता हूँ। मैंने परिक्षण के द्वारा पता लगाया कि जमीन के नीचे एक भयंकर विद्युत-प्रवाह घूम रहा है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि आज वह बिजली हमारे शहर के नीचे से निकलेगी। आपको मालूम नहीं हो रहा है, पर मैं जानता हूँ कि इस वक्त हमारे नीचे से भयंकर बिजली प्रवाहित हो रही है। यदि हमारे बिजली के खम्भे जमीन में गड़े रहते तो वह बिजली खम्भों के द्वारा ऊपर आती और उसकी टक्कर अपने पावरहाउस की बिजली से होती।

अथवा

लड़ाई का जमाना। महाराज अव्वल नम्बर के निकले। सबकी ऐसी-तैसी। फौज में भरती हो गए। कुछ दिन बाद वर्दी में सीधे लक्खा के यहाँ पहुंचे। रात को बकरा कटा के गोस (गोश्त) आया। महुआ का ठर्रा। अब कोई आवै साला। रोकै महाराज को। लक्खा बुआ फुर्र-फुर्र उड़े। मिसिर, तिवारी, गोसाईं सब गौरीशंकर महाराज के इर्द-गिर्द घूमैं।